© 2019 IJSRSET | Volume 6 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Education

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर संचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन

शोध–निर्देशक
डॉ0 प्रमोद कुमार मिश्र
एसोसिएट प्रोफेसर
(शिक्षाशास्त्र विभाग)
नेहरू ग्राम भारती (मानित वि0वि0)
प्रयागराज

शोध–छात्रा
सुमन कन्नौजिया
(शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित वि0वि0)
प्रयागराज

सारांश– प्रस्तुत समस्या कथन ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर संचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन'' है। अध्ययन में शोध विधि के अन्तर्गत कार्योत्तर अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र छात्राएँ है। प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरीकृत प्रतिदर्श प्रतिचयन विधि द्वारा 20 विद्यालयों का चयन तथा कक्षा–9 में अध्ययनरत् 600 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया है। उपकरण के रूप में स्वनिर्मित ''संचार माध्यम का प्रभाव'' एवं डॉ. जगदीश एवं डॉ. ए.के. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित 'मेण्टल हेल्थ इन्वेन्ट्री' का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु एफ–अनुपात (एनोवा) एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि–

1. उच्च, मध्यम एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के एफ–अनुपात का मान 0.01 पर सार्थक है अतः संचार माध्यम के प्रयोग का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।
2. उच्च एवं मध्यम संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर है अर्थात् उच्च संचार माध्यम प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य मध्यम संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना में कम है।
3. उच्च एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर है अर्थात् उच्च संचार माध्यम प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य निम्न संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना में कम है।

मध्यम एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों के मानसिक स्वास्थ्य में समानता है।

की–वर्ड : माध्यमिक, विद्यार्थी, संचार माध्यम, मानसिक स्वास्थ्य, प्रभाव

प्रस्तावना–

आज का युग संचार का युग है आज समाज में कुछ भी असम्भव नहीं है। संचार माध्यम ने समाज के हर पहलु को छुआ है। और जिसका असर प्रत्येक व्यक्ति के घर–घर में दिखाई देता है। संचार माध्यम ने सूचना से लेकर मनोरंजन तक के सभी साधन मनुष्य को दिया है। संचार माध्यम के कार्यक्रमों ने चाहे वह सिनेमा हो या फिर धारावाहिक इसने सभी व्यक्ति के मन में चाहे वह बच्चे हो या फिर बड़ों सभी में अपनी एक विशेष जगह बना ली है। उठते–बैठतें, खाते–पीते हर समय हम बस इसी को देखते है। खास कर बच्चों पर इसका सीधा प्रभाव होता है। आजकल बच्चों के मनोरंजन के लिए नई–नई सिनेमों बनाई जा रही है, जिसे बच्चों का ज्ञान बढ़ रहा है। विज्ञान आज इतनी तरक्की कर रहा है कि वह सिनेमा के द्वारा बच्चों के दिमाग को कम्प्यूटर बना दे रहा। कार्टून सिनेमों के द्वारा बच्चों को देवी–देताओं की कहानियां दिखाई जाती हैं वही एक ओर रामायण जैसे महाकाव्य को भी बच्चों को कार्टून सिनेमों द्वारा दिखाया गया। बच्चों के जासूसी सिनेमों भी बनाई जाती है।

सिनेमों के कई रूप होते है वही कुछ ऐसी भी सिनेमों है जो बच्चों पर गलत असर डाल रही है। बच्चों का अपरिपक्व मस्तिष्क जो सिनेमों द्वारा कही न कही प्रदूषित हो रहा है। उनके मस्तिष्क का मानसिक हनन हो रहा है। आजकल के बच्चें संस्कारहीन हो रहे है, उनमें फैशन, आधुनिकता का असर दिखाई देता है। वो सिनेमा के हीरों जैसा हेयर स्टाइल रखते है, वैसे कपड़े पहनेंगे, वैसे बोलने की स्टाइल, इस तरह से अपने पंसदीदा हीरो की नकल वह हर तरह से उतारने की कोशिश करते है। वही अश्लीलतापूर्ण सिनेमों के दृश्य उनके जिज्ञासु प्रवृत्ति मन को उत्तेजित करता है। जिसके कारण वह उस सिनेमा को देखते है। नतीजा यह है कि आज बलात्कार, छेड़छाड़ की घटनायें आये दिन सुनाई पड़ती है। पूर्व अध्ययनों में **राजमणि सरोज (2005)** के अध्ययन से, आजकल दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रम विद्यार्थियों के मस्तिष्क पर एक छाप छोड़ जाते हैं, जिस कारण वे उसे पूरी तरह सत्य मानते हुए अपने व्यवहार में भी उसे लाते हैं। **कठेरिया एवं अन्य (2013)** ने अध्ययन के परिणामस्वरूप पाया कि टेलीविजन शो में दिखाए जाने वाली कथानकों पर विश्वास करना उनकी मानसिकता को दूषित करने के साथ–साथ परिवार और समाज को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

कुछ विद्वानों का मत है कि संचार माध्यमों के नकारात्मक दृष्टि से देखा जाय तो आज संचार माध्यमों के अधिक उपयोग एवं उसका दुरूपयोग व्यक्ति एवं समाज दोनों के लिए हानिकारक एवं समस्या पैदा करता है। दूरदर्शन आज मनोरंजन का सबसे बड़ा और लोकप्रिय साधन है। छोटे बड़े सभी बिना किसी प्रयास के अपना समय बिता लेते हैं और बार–बार सकारात्मक सोच के साथ बचपन से ही माता–पिता बच्चों को टेलीविजन से जोड़ने का प्रयास करते हैं किन्तु ''अति सर्वत्र वर्जयेत'' बहुत अधिक समय तक टेलीविजन देखना विशेषकर छोटे बच्चों के हानिकारक हो सकता है। शुरू शुरू में तो सबको अच्छा लगता है की वह टेलीविजन से पूरी तरह अवगत है स्वयं ही उसका उपयोग कर सकता है किन्तु ध्यान देने की आवश्यकता है।

यह कहने पर कि छोटे बच्चों के लिए टी0वी0 एवं मोबाइल उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए हानिप्रद है। यह कहे जाने पर अभिभावक असंतोष प्रकट करते है और कहते है कि समय बदल गया है। जमाने के साथ चलना चाहिए, हमारा बेटा पिछड़ जाएगा। उनका यह सोचना प्रत्यक्ष रूप में तो सही लगता है लेकिन

आगे चलकर बुरा प्रभाव भी दिखाई देता है। टेलीविजन के कार्यक्रमों का प्रभाव हमारे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। इसके बहुत से नकारात्मक प्रभाव है।

अनुसंधान यह बताते हैं कि टीवी प्रोग्राम एवं सिनेमा में दिखाई जाने वाली हिंसा बच्चों में डर, उत्तेजना, आक्रामकता और विद्रोही व्यवहार को बढ़ावा देती है। कम नींद का होना, पढ़ाई में ध्यान न लगना और एकाग्रता की समस्या अक्सर बच्चों में आ जाती है, वे असवंदनेशील हो जाते हैं। बच्चे जब हिंसा से अपना मनोरंजन करते हैं तो वे कठोर, निर्दयी संवेदना शून्य हो जाते हैं। और किसी भी प्रकार के दबाव को सहन नहीं कर सकते और हमारे स्कूलों, समाज और समुदायों को और अधिक हानिकारक बनाते हैं।

समस्या कथन–

''संचार माध्यम का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य–

अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया गया है–

1. संचार माध्यम का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. उच्च, मध्यम एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. उच्च एवं मध्यम संचार माध्यम के प्रयोग का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर नहीं है।
2. उच्च एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर नहीं है।
3. मध्यम एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर नहीं है।

शोध–प्रविधि–

अध्ययन में शोध विधि के अन्तर्गत कार्योत्तर अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र छात्राएँ है। प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरीकृत प्रतिदर्श प्रतिचयन विधि द्वारा 20 विद्यालयों का चयन तथा कक्षा–9 में अध्ययनरत् 600 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया है। उपकरण के रूप में स्वनिर्मित ''संचार माध्यम का प्रभाव'' एवं डॉ. जगदीश एवं डॉ. ए.के. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित 'मेण्टल हेल्थ इन्वेन्ट्री' का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु एफ–अनुपात (एनोवा) एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. संचार माध्यम का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन

सारणी सं0 1

उच्च, मध्यम एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर का एफ–अनुपात

स्रोत	df	SS	MS	F
समूहों के मध्य	2	3449.13	1724.56	6.08
समूहों के अन्दर	597	169197.21	283.41	
कुल	**599**	**172646.34**	**2007.98**	

तालिका 1 में समूहों के मध्य का वर्ग योग (SS) एवं माध्य वर्ग योग (MS) क्रमशः 3449.13 एवं 1724.56 तथा समूहों के अन्दर क्रमशः 169197.21 एवं 283.41 है। एफ–अनुपात = (6.08) जो कि स्वतंत्रांश = (2, 597) पर एफ–अनुपात के क्रान्तिक मान 3.02 से अधिक है, 0.01 पर सार्थक है। पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना (H_1) अस्वीकृत होती है। परिणामतः उच्च, मध्यम एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में असमानता है।

तालिका 1.1

उच्च, मध्यम एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर का टी–अनुपात

क्र. सं.	**संचार माध्यम के प्रयोग का स्तर**	**न्यादर्श (N)**	**मध्यमान (M)**	**मानक त्रुटि (σ_D)**	**मध्यमानों का अन्तर (D)**	**टी–अनुपात (t-value)**
1.	उच्च	325	188.49	1.78	5.13	2.88*
	मध्यम	123	193.62			
2.	उच्च	325	188.49	1.65	4.53	2.74*
	निम्न	152	193.02			
3.	मध्यम	123	193.62	2.04	0.60	0.29
	निम्न	152	193.02			

*0.01 स्तर पर सार्थक

तालिका 1.1 में **उच्च, मध्यम एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य** का मध्यमान क्रमशः 188.49, 193.62 एवं 193.02 है। उच्च एवं मध्यम तथा मध्यम एवं निम्न संचार माध्यम के

प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के युग्म का t का मान 0.01 स्तर पर दिये गये मान (2.60) से अधिक है, जो सार्थक है। जबकि मध्यम एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के बीच टी–मान 0.01 स्तर पर दिये गये मान से कम है अतः मध्यम एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. उच्च, मध्यम एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के एफ–अनुपात का मान 0.01 पर सार्थक है अतः संचार माध्यम के प्रयोग का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।
2. उच्च एवं मध्यम संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर है अर्थात् उच्च संचार माध्यम प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य मध्यम संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना में कम है।
3. उच्च एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर है अर्थात् उच्च संचार माध्यम प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य निम्न संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना में कम है।
4. मध्यम एवं निम्न संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों के मानसिक स्वास्थ्य में समानता है।

अतः उच्च संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों में आलस्य, सिरदर्द, अनुशासन की कमी, मानसिक तनाव, चिन्ता इत्यादि अधिक पाया जाना स्वाभाविक है। संचार माध्यम के द्वारा निकलने वाली किरणें उनके स्वास्थ्य को प्रभावित करती है साथ ही टीवी, मोबाइल, कम्प्यूटर इत्यादि संचार माध्यमों का उच्च प्रयोग करने पर विद्यार्थियों चक्कर, झनझनाहट, खिचाव, जलन, बहरापन, ट्यूमर, नपुंसकता, हाईअटैक, ब्लडप्रेशर इत्यादि बीमारियों के साथ–साथ उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अर्चना (2011). ए स्टडी ऑफ मेण्टल हेल्थ ऑफ एडोलसेण्ट्स टू मोरल जॅजमेण्ट, इंटेलिजेन्स एण्ड पर्सनॉलिटी, पी.एच–डी. एजुकेशन, डिपार्टमेण्ट ऑफ एजुकेशन एण्ड कम्प्युनिटी सर्विस पजाब यूनिवर्सिटी, पटियाला।
- कठेरिया एवं अन्य (2013). टेलीविजन कार्यक्रमों का बच्चों पर प्रभाव (वर्धा शहर के विशेष संदर्भ में), इण्डियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल, वॉल्यूम–3, इश्शू–7, पृ0 1–4
- डेनिया, जे. एवं अन्य (2014). इफेक्टिव बिहैवियर ड्यूरिंग मदर–डाटर कनफिल्किट एण्ड बॉर्डरलाइन पर्सनालिटी डिसआर्डर सेवेरिटी अक्रास एडोल्वसेन्स. एन.आई.एच. पब्लिक एक्सीस, पर्सनल डिसआर्डर, 5(1), 88–96

- गुप्ता, योगेश कुमार (2017). भारत में टेलीविजन समाचार चैनलों की प्रभावशीलता (चयनित चैनलों का तुलनात्मक अध्ययन), इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च ग्रन्थालय–ए नॉलेज रिपोस्टिरी, वॉ0 5, इश्शू–7, पृ0 79–88
- पाल, मिली (2017). मनोरंजन संसाधनों के अधिक उपयोग से बालको में निरन्तर बढ़ती व्यक्तिगत समस्याए, इण्टरनेशनल मल्टीडिस्पिलनरी ई–जर्नल, वॉल्यूम–6, इश्शू–4, पृ0 11–15